॥ श्रीवीतरागायनमः ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ श्रीगौतमाय नमः ॥

सूचना

यह पुस्तक [illegible] से [illegible], तथा [illegible] भाषा में अनुवाद किया हुआ [illegible] नहीं [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Panmull Sethia.

॥ श्रीवीतरागाय नमः ॥

॥ अनुक्रमणिका ॥

अनुपूर्व्वी १९

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

अनुपूर्व्वी २०

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

॥ अथ २० विहरमानोंके नाम ॥

१	श्री सिमंधर स्वामी	११	श्री वज्रधर स्वामी
२	श्री युगमधर स्वामी	१२	श्री चंद्रानंदन स्वामी
३	श्री बाहु स्वामी	१३	श्री चंद्रबाहु स्वामी
४	श्री सुबाहु स्वामी	१४	श्री भुजंग स्वामी
५	श्री सुजात स्वामी	१५	श्री ईश्वर स्वामी
६	श्री स्वयप्रभ स्वामी	१६	श्री नेमप्रभ स्वामी
७	श्री ऋषभानन स्वामी	१७	श्री वीरसेन स्वामी
८	श्री अनंतवीर्य स्वामी	१८	श्री महाभद्र स्वामी
९	श्री सुरप्रभव स्वामी	१९	श्री देवयश स्वामी
१०	श्री विशालधर स्वामी	२०	श्री अजितवीर्य स्वामी

वर्त्ताव्यो आणंद ॥८॥ श्री रिषभदेवना भरतादिक सो पुत्र; वैराग्यमन आणी, संयम लियो अद्भुत ॥९॥ केवल उपजाई, करि करणी करतुत; जिनमत दीपावी, सघला मोक्ष पहुंत ॥१०॥ श्री भरतेश्वरना, हुवा पटोधर आठ, आदित्य जशादिक, पहोंत्या शिवपुर वाट ॥११॥ श्री जिन अन्तरना, हुवा पाट असंख्य; मुनि मूक्ति पहोंत्या, टाल्या कर्मनो वंक ॥१२॥ धन्य कपिल मुनिवर, नमी नमुं अणगार; जेणे ततक्षण त्याग्यो, सहस्र रमणी परिवार ॥१३॥ मुनिवर हरकेशि चित्त मुनिश्वर सार, शुद्ध संयम पाली, कर दियो खेवो पार ॥१४॥ वली इखुकार राजा, घर कमलावती नार, भृगु ने जसा, तेहना दोय कुमार ॥१५॥ छये छति रिद्धि छांडीने, लीधा संयम भार, इण अल्पकालमां, पाम्या मोक्ष द्वार ॥१६॥ वली संजती राजा, हरण आहिडे जाय; मुनिवर गद भाली, आण्यो मारग ठाय ॥१७॥ चारित्र

सर्वार्थसिद्ध पहोंत्या, चवि लेशे निर्वाण; श्री ज्ञातासूत्रमां, जिनवरे कर्यां वखाण ॥५४॥ गौतमादिक कुमर, सगा अठारे भ्रात; सर्व अंधक विष्णु सुत, धारणी ज्यारी मात ॥५५॥ तजी आठ आठ नारी काढी दिक्षानी वात; चारित्र लेइने कीधो मुक्तिनो साथ ॥५६॥ श्री अणीक सेनादिक, छये सहोदर भाय; वसुदेवना नंदन, देवकी ज्यारी माय ॥५७॥ भद्दीलपुर नगरी, नाग गाहावइ जाण; सुलसा घेर वधिया, सांभली नेमिनी वाण ॥५८॥ तजी बत्रीश बत्रीश अंतेउरी, निकलीया छटकाय; नल कुबेर समाणा, भेटया श्री नेमिना पाय ॥५९॥ करी छठ छठ पारणां, मनमें वैराग्य लाय; एक मास संथारे मुक्ति बीराज्या जाय ॥६०॥ वली दारुण सारण, सुमुख दुमुख मुनिराय; वली कुमर अणादित गया मुक्तिगढ मांय ॥६१॥ वसुदेवना नंदन, धन्य धन्य गजसुकमाल; रुपे अति सुंदर, कलावंत वय

वाल ॥६२॥ श्री नेमि समीपे, छोडयो मोह जंजाल;
भीक्षुनी पडिमा, गया मशाण महाकाल ॥६३॥
देखी सोमल कोप्यो, मस्तक बांधी पाल; खेरना
खीरा, शीर ठविया असराल ॥६४॥ मुनि नजर
न खंडी, मेटी मननी झाल ॥ कठन परीसह
सहीने मूक्ति गया ततकाल ॥६५॥ धन्य जाली
मयाली उवयालादिक साध; संभुने परजुन,
अनीरुद्ध साधु अगाध ॥६६॥ वली सचनेमी
दृढनेमी, करणी कीधी बाध; दशे मुनि मुगते
पहोत्या, जिनवर वचन आराध ॥६७॥ धन्य
अर्जुनमाली कर्यो कदाग्रह दूर; वीरपे व्रत लेइने
सत्यवादी हुवा शुर ॥६८॥ करी छठ छठ पारणां
क्षमा करी भरपुर छव मासमांही कर्म कियां
चकचुर ॥६९॥ वली कुंवर अइवंता दीठा गौतम
स्वाम; सुणी वीरनी वाणी कीधो उत्तम काम ॥७०॥
चारित्र लइने पहोंच्या शिवपुर ठाम धूर आद
मकाद अंत अलक्ष मुनि नाम ॥७१॥ वली

कृष्णरायनी अग्रमहीपी आठः पुत्र वहुदोये संच्या पुण्यना ठाट चारित्र लइने तपकरी कर्मज काट एक मास संथारे पोहतो शिवपुर वाट ॥७२॥ यादवकुल सतियां टाल्यो दुःख उचाट पहोंत्या शिवपुरमें. ए छे सुत्रनो पाठ ॥७३॥ श्रेणिकनी राणी कालियादिक दश जाणः दश पुत्र वियोगे सांभली श्री वारनी वाण ॥७४॥ चंदनवालाये संजम लेइ हुवा जाणः तप करी देहकुशी पहोंत्या छे निर्वाण ॥७५॥ नंदादिक तेरे श्रेणिक नृपनी नारः सघली चंदनवालापे लीधो संजम भार ॥७६॥ एक मास संथारे. पहोत्या मुक्ति मझारः ए [illegible] जणानो अंतगडमां अधिकार ॥७७॥ श्रेणिक [illegible] बेटा जालियादिक तेवीसः [illegible] पाल्यो विश्वावीश ॥७८॥ तप [illegible] मन जगीशः देवलोके पहोत्या [illegible] रीस ॥७९॥ काकंदिनो [illegible] महावीर समीपे. लीधो [illegible]

नी जोड़, नारीना बंधन, ततक्षण नाख्यां तोड़ ॥६०॥ घर कुटुंब कबीलो, धन कंचननी क्रोड, एक मास संथारे, टाले भवनी खोड ॥६१॥ श्री सुधर्मास्वामीना शिष्य, धन्य धन्य जंबुस्वाम; तजी आठ अंतेउरी, मातपिता धन धाम ॥६२॥ प्रभवादिक तारी, पहोंत्या शिवपुर ठाम; सुत्र प्रवर्तावी, जगमां राख्युं नाम ॥६३॥ धन्य ढंढण मुनिवर, कृष्णरायना नंद, शुद्ध अभिग्रह पालि, टाली दीया भव फंद ॥६४॥ वली खंधक ऋषि-नी, देह उतारी खाल, परीसह सहीने, भव फेरा दिया टाल ॥६५॥ वली खंधक ऋषिना, हुवा पांचसें शिष्य, घाणीमां पिल्या, मुक्ति गया तजी रीस ॥६६॥ संभुतिविजय शिष्य, भद्रबाहु मुनी-राय: चउदे पुरवधारी, चंद्रगुप्त आण्यो ठाय ॥६७॥ वली आर्द्रकुमार मुनि, थुलभद्र नंदिषेण, अर-णिक अइमंत्तो, मुनिश्वरांनी श्रेण ॥६८॥ चोवी-सें जिनना मुनीवर, संख्या अठावीस लाख: उपर

धारीः नमो नमो तिण काल ॥१०८॥ ए जतियों सतियोंनां. लीजे नित प्रते नाम; शुद्धे मन ध्यावो. एह तरणनो ठाम ॥१०९॥ ए जतियो सतियोशुं. राखो उज्वल भाव; एम कहे ऋपि जेमलजी. एह ज तरणनो दाव ॥११०॥ संवत अढारने. वरस त्रानां शिरदार; गढ झालोरमां एह कह्यो अधिकार ॥१११॥ समाप्तम् ॥

॥ अथ १४ नियम ॥

(१) सचित्त-याने कच्चा पाणी. कच्चा दाणा कच्ची हरी (लिलोत्री) वगेरे सचित्त (जीवयुक्त) अनेक वस्तु समजना जिसकी मर्यादा अपनी इच्छानुसार करना ॥ १ ॥

(२) द्रव्य-याने जितनी वस्तु अपने मुंहमें लेनेमें आवे सो उनकी गिणती रखकर मर्यादा करना।

मांचे खुरसी वगैरे जो बेठनेको तथा, सोनेको काम आवे उसकी मर्यादा करना ॥ ९ ॥

(१०) विलेपण-याने केशर कुंकुं चंदन तैल पीठी वगैरे शरीरको विलेपन करनेकी मर्यादा करणा ॥ १० ॥

(११) दिसी-याने पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ऊंची नीची यह छ दिसीमें जानेकी मर्यादा करना ॥ ११ ॥

(१२) अबंभ-याने कुशील (स्त्रीसेवन) की मर्यादा करना ॥ १२ ॥

(१३) नाहावण-याने स्नान मंजन करनेकी मर्यादा करना ॥ १३ ॥

(१४) भंतसुं-याने आहार पाणी करनेकी मर्यादा करना ॥ १४ ॥ इति ॥

(६) त्रसकाय-याने बेंइंद्री, तेंद्री चौरिंद्री, पंचेंद्री, वगैरे हलते चलते जीवकों विन गुन्हेसे मारनेका तथा सर्वथा मारनेका पच्चक्खाण करना ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ३ प्रकारका व्यापारकी मर्यादा ॥

(१) असी-याने शस्त्र, छुरी, कटारी, चकु, ढाल, तरवार, बंदुक, कतरणी, वगैरे सब जातके शस्त्रोकी मर्यादा करणा ॥ १ ॥

(२) मसी-याने कलमसें कागज पत्र खत स्टांप वही, वगैरे लिखनेका समानकी मर्यादा करणा ॥ २ ॥

(३) कृषी-याने करसणीका काम (खेत वाग वगेचा वगैरे) जितना रखना हो उस उप्रांतका त्याग कर लेना ॥ ३ ॥ इति ॥

यह सब मिलके एकंदर २२ वोलोंकी मर्यादा श्रावक श्रावीकाओकों नित्य हमेश सुबो करके

आसी, छोड सिधास्यो रे॥ सतगुरु० ॥ २ ॥ घड़ी घड़ि यों आयु छीजे, खबर पड़े नहीं कांई रे ॥ मनुष्य जमारो मुशकिल पायो, भली पुन्याई रे ॥ सतगुरु० ॥ ३ ॥ इम जाणीने धर्म करो तुम, खर्ची बांधो परभव लारो रे ॥ तेजमल कहे तिड़सठ साले, उदयपुर मांही रे ॥ सतगुरु म्हारा० ॥४॥ ॥ इति गुणग्राम स्तवन समाप्तम् ॥

॥ स्तवन गुणग्राम गणधरजीनो ॥

गणधर प्यारा रे श्री विरजीनंदजीका, शिष्य इग्यारा रे॥ गणधर प्यारा रे॥ टेर॥ इन्द्र भुतीने अग्निभुती, वायुभुती सुखदाई रे॥ पांच पांचसे निकल्या लारे सगला भाई रे॥ गणधर ॥ १ ॥ विगत भुतीने सुधरमा स्वामी, वीर पाटवी जाणो रे मडी पुत्रने मोरी पुत्रजी, अकंपित आणो रे ॥ गणधर० ॥२॥ अचलजीने मेतारजजी, वले श्री प्रभासो रे ॥ नाम जप्यां

सू आनन्द वर्त्त, वंचितयासो रे ॥ गणधर ॥
गुरु हमारा इन्द्रमलजी, नीमच सहर पधारया
तेजमल कहे जेठ गुणन्तर, चवदस सारे
गणधर ॥ ९ ॥
॥ इति गुणग्राम गणधरजीको स्तवन समाप्त ॥

॥ अथ पद्म प्रभुजीनो स्तवन लिख्यते ॥

नांम कर्म गजको फंद छुडायो ॥ पद्म
पद्मप्रभु पावन नांम तिहारो, पतीत उ
हारो ॥ प. टेर ॥ जदपी धीवर भीलकसाई,
पापीष्ट जन्मारो ॥ तदपी जीव हिंस्या तज
पांम भवनीध पारो ॥ पद्म० ॥ १ ॥
प्रमदा बालक की, मोटी हिंस्या च्यारो ॥
करता हार प्रभु भजने, हान हो त्यामु
॥ पद्म ॥ २ ॥ वेस्या चुगल छिनाल जुवा
चार महा ठग धारो ॥ जो इत्यादि भज
ताने, सो निस्तर सम्प्रारा ॥ प० ॥ ३ ॥ पार

साथ ॥ श्रेणिक० ॥११॥ वेदना जावे म्हायरी। तो लेउं संजम भार ॥ इम चिन्तवतां वेदना गइ। प्रभाते रे थयो अणगार ॥श्रेणिक०॥१२॥ गुण सुण राजा चिन्तवे। धन धन एह अणगार॥ राय श्रेणिक समकित लीवो। वान्दी आयोरे नगर मझार ॥ श्रेणिक० ॥१३॥ अनाथी जीरा गुण गांवता॥ कटे कर्मारी कोड़ गुण समय सुन्दर इम भणे। ज्याने वन्दुरे वे कर जोड़ ॥श्रेणिक०॥१४॥ इति श्री अनाथी मुनीरो स्तवन समाप्तम् ॥

थांसुं मोह माहरो अति घणो, ज्युं चकरि डोर समान; थांने कांई कसी हुई तो सती होऊं थहारे साथ ॥ २ ॥ जन्म दियो माहरी मांयड़ी, रुप दियो किरतार; पूरव पुन्य पूरा किया, भर जोड़ी भारतार ॥ ३ ॥

ढाल २) धणी बोलैं वै सुन नारी हे, आग्यां लोपो मति म्हारी हे। थारै कारण हुं जूदो हुवो रे, मैंतो लोगामें अपजश लीयोरे ॥ १ ॥ नवमास गरभ में राख्यो हे, थारे कारण छेह में दाख्यो हे। माय बापकी काया बलसीरे, तोसुं ऊठि सवारे लड़सीरे ॥ २ ॥ तूं छे मोटा कुलरी जाईहे, लीजे शाखने शोभ सवाई हे। दूजी ढाल ए पूरी कीधी रे निज नारीने पति सीख दीधो रे ॥ ३ ॥

दोहा।

माय कहे सुन नानड्या, सांभल माहरी वात। चरित्र देखो नारी तणा, कुण २ चलसी थारे साथ ॥ १ ॥ सेठजी मनमें जानीयो, माजी

॥ अथ राजुलजी रो थारे मासो लिख्यते ॥

राजुल ऊभी विनवे रे पीया, सुगणा २ रे, नेम कुंवार. आप पाने संजम लियो रे: थारी साथ चढया गिरनार अ[illegible] [illegible] आप आवो जादव नेमजी रे ॥ १ ॥ [illegible] [illegible] दाख्या नहीं रे पीया, लिनो [illegible] संजम भार [illegible] आवागमण किम रहस्ये रे थारी [illegible] [illegible] भरतार ॥ अथ० ॥ २ ॥ आम्बा [illegible] [illegible] रे पीया [illegible] रहो मन माय दिन [illegible] पीया [illegible] रे, थारी ओलुंडी [illegible] [illegible] ॥ अथ० ॥ ३ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] रे पीया, [illegible] रे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रे थारी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

रे पीया, आभे २ रे, चमके विज, तुम रुसी ने, किम गया रे, वारी आई सावण री तीज ॥ अव० ॥ ५ ॥ सावण आयो साहवा रे पीया, गाज २ रेयो, गन गोर, वुंद लगे पीया वाय ज्युं रे, वारी जादव लियो चित चोर ॥ अव० ॥ ६ ॥ नेम जिणद पाछा वल्या रे पीया, आयो २ रे, भादव मास, दादर पपईया बोलता रे, वारी पितम नहीं मुझ पास ॥ अव० ॥ ७ ॥ नेणे नींद आवे नहीं रे पीया, आयो २ रे, मास आसोज, नेमि मुझ मुकी गया रे, वारी अव किम माणु मोज ॥ अव० ॥८॥ कातिक कंथ नई वावरो रे पीया. ऊभी २ रे, जोऊं वाट, महल पधारो सायवा रे. वारी सुनी हिंडोला खाट ॥ अव० ॥ ९ ॥ मिगसर वेरी आवियो रे पीया, देवण २, लागो दोप, ऊंडे पड़वे पोढता रे, वारी सव गया पीया सुख ॥ अव० ॥ १० ॥ नेमि जिणंद पाछा वल्या रे पीया, आयो २ रे, पापी

अव० ॥ १७ ॥ वरजो सासुजीथांरा पुतने रे,
पीया, वरजो २ बाईसा, थांहरो वीर, गेर गुफा
में वसी रेयारे, वारी घर घर मांगे भीख ॥
अव० ॥ १८ ॥ असाडा आछी तरह रे पीया,
लीनो २ रे, संजम भार, तीनसे परिवार सुं रे,
वारी पोहता रे गढ गिरनार ॥ अव० ॥ १६ ॥
राजमती रंगे भरी रे पीया. लीनो २ रे, संजम
भार, ५४ दिन पेहला गया रे, वारी पोहता रे
मुक्त मझार ॥ अव० ॥ २० ॥ मुरधर देश मां
आवीया रे पीया, नाम २ सखी, चन्द नाम,
श्रावक सव समजु वसे रे. वारी करे धर्म रो
काम ॥ अव० ॥ २१ ॥

॥ इति श्री राजलजी रो बारे मासो समाप्तम् ॥

। ॥ भारी करमा जीवड़ा, ते किण, विद जागे हो
। वं० ॥ २० ॥ नियाणो तुमे कियो, पट खंडज
फेरा हो ॥ इण कर्णी सुं जाण जो, थारां नरके डेरा हो
॥ वं० ॥ २१ ॥ पांचुं भव भेला किया, आपा दोनुं
भाई हो ॥ हिवे मिलणो छे दोहिलो जिम पर्वत
राई हो ॥ वं० ॥२२॥ ब्रह्मदत्त पहुंतो नर्क सप्तमी,
चित्त मुक्ति मझारो हो ॥ कर जोड़ी कवियण
कहे, आवागमण निवारो हो ॥ वं० ॥ २३ ॥

इति चित संभूतको स्तवन समाप्तम्

पार्श्व चंद्रप्रभु, दास रहुं चरणा ॥ चरण नित्य वंदु, मेरी जान चरण नित्य वंदु ॥ ज्युं कटे कर्म का फंदा, तुम तजो जगतका धंदा, दीठा होये नयन अमितो ठरणा रे ॥ दीठा० ॥ पांचपद० ॥ ॥ २ ॥ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपूज्य, हृदय मांहे धरणा ॥ विमल अनंत धर्मनाथ शांतिजी, दास रहुं चरणा ॥ जिनंद मोहे तारो, मेरी जान जिनंद मोहे तारो ॥ संसार लगे मोहे खारो; वैराग्य लगे मोहे प्यारो, में सदा दास चरणारो; नाथजी अब कृपा करणा रे ॥ नाथ० ॥ पांच पद० ॥ ३ ॥ कुंथु अर मल्लि मुनि सुव्रतजी, प्रभु तारण तरणा ॥ नमि नेम पार्श्व महावीरजी, पाप परा हरणा ॥ तरे भव्य प्राणी, मेरी जान तरे भव प्राणी ॥ संसार समुद्र जाणी, सुणो सूत्र सिद्धांतकी वाणी, पाप कर्मसें अब तो डरणा रे ॥ पाप० ॥ पांचपद० ॥ ४ ॥ इग्याराजी गणधर वीस विहरमान, वांद्या शुं मीटे मरणा ॥ अनंत

अभोगी देवतणी, गज एरावण देवता होके इंद्र को सिर बेठावेगा ॥ जो० ॥ २ ॥ मनुष्य भव में वसुदेव और चक्रवृत का पद मोटा, बडे २ नरेन्द्र देवता लेते हैं जिनका ओटा, चऊदे रत्न और नवि निधान से किसि वस्तु का नहीं टोटा, कितने को तो अन्न नहीं मिलता पिणे को नहीं लोटा, जो निग्रण जावे सो नहीं आवे करणी विन पछतावेगा ॥ जो० ॥ ३ ॥ तिर्यंच गति में देखो अश्व गजकी पदवी पाया, सहश्र देवता सेवे जिनको, कोई जननी उनको जाया, केई भुखे प्यासे वंध खुटे केइक वोज उटा लाया, निगोदकी तो वेदन सुण के थरर कालजा थरीया, इम जाणी धरो दया दिल में तो दुःख सहु छुट जावेगा ॥ जो० ॥ ४ ॥ नर्कगति में दुःख वेदना परमाधामी देते हें, वेर वदला वांधा जिसका फल भुगत कर लेते हे, इम कर्मकी गत हे दुष्कर केवल ज्ञानी केते हें, दुकृत से दुःख

घणी पाई ॥ तजो० ॥१॥ काल अनंतो यों बीत्यो, धर्म बिन रह गयो यों रीतो, देव और धर्म गुरु चीनो, रत्न संग तेरे ये तीनों ॥ दोहा ॥ बिन करणी पछतायगा, पड़ा ममता के मांय, जन्म जरा और मरण मिटावण, लगे औद्या ही उपाय ॥ मिलत ॥ सोच हिरदे ध्यान लगाई, क्या प्रभु कहा सूत्र मांई ॥ तजो० ॥ २ ॥ बाडा ममत करी भरीया. पापसे जरा नहीं डरिया, हर्षसे हिरदा गहवरिया. राग और द्वेष चित धरिया ॥ दोहा ॥ महिमा पुजा का लोलपी. करे न हित विचार. इंद्रादिक यो होइजी. वडो पुजायो बहुवार ॥ मिलत ॥ पृथ्वी पाणी के मांई, उपज्यो तेहि फिर जाई ॥ तजो० ॥ ३ ॥ मानसे निची गती पावे. क्यों वृथा ऊमर गमावे, सुगणा चित ठाम लावे. पक्ष छोड़ शिव पंथ धावे ॥ ॥ दोहा ॥ उगणीसे छप्पन भला, स्यालकोट के मांय, केवलरिख की विनती, सुण जो चित

सें, नहीं बंधव मुख बोले; साला सेती गूंज घणेरी, गुप्त बात खोले ॥ हु० ॥ ४ ॥ नारी कारण न्यारो होवे, मांगे सो लावे; वा नारी निज पतिनें छोडी, और पुरुष ध्यावे ॥ हु० ॥ ५ ॥ बूढेनें बेटी परणावे; लोभ दृष्टि जोवे; अल्प दिनां में हुवे ज दुखणी, निज पतिनें रोवे ॥ हु० ॥ ६ ॥ मुखमें न धोला सिर पर धोला, परणीजण चावे; कुलवंती कोई रहे कारमें, और बिगड़ जावे ॥ हु० ॥७॥ भला आदमी बहु सिधावे, पापीनो पोरो: दुखिया रानी उमर मोटी, सुखी जिवे थोड़ो ॥ हु० ॥ ८ ॥ दादो बैठा पोतो चल जावे, नहीं सब सुखी पावे: निर्धन के बहु बेटा बेटी, धनवंत नरसावे ॥ हु० ॥ ९ ॥ सुर्प धन जोबन में गर्व. छिनछिन आउ छीजे: रामचंद्र कहे हलाहल कलुमें, धर्म ध्यान कीजे ॥ हु० ॥ १० ॥

जासी घर को ॥ दुजा देख कर करे खुवारी, जब वन में भटक्यो ॥ चतुर० ॥ ५ ॥

इति

सप्त व्यसन लावणी

संसारी लोको सात व्यसन छोडो भावसुं ॥ सं० ॥ टेर ॥ जुवा खेलण मांस मद्य चोर, वेश्या व्यसन शिकार, चोरी पर रमणी को रमवो, सातुं व्यसन निवार हो ॥ सं० ॥ १ ॥ जुवा खेलिया पांडवाने रे, मांस भखिया बकराय मदिरा पिवी जादवांने रे, जद्दवां मूल में जाय हो ॥ सं० ॥ २ ॥ चारुदत्त वेश्याने सेवी, ब्रह्मदत्त आखेट, सत्यघोष पर धन के कारण, पहुंचो नरकां पेट

विन ज्ञान आतम किम जोवे, मुढ विरथा जन्मा-
रो खोवे, तेतो भव २ मांहे रोवे रे ॥ मन० ॥२॥
चारित्र तारे गत चारो, तप सेही होवे निस्तारो,
शुद्ध भावसे खेवा पारो, जावे पंचमी गती मझा-
रो रे ॥ मन० ॥ ३ ॥ दान दिया दरिद्र जावे,
शील सु ऊंची गत पावे, इम शिव सुख हाथे
आवे, त्रिलोकीनाथ गुण गावे रे ॥ मन० ॥ ४ ॥
उगणीसे छपन जाणो, महा वदी पंचम दिन
ठाणो, पिरोजपुर में केवलरिख गाणो रे, जो
चेतो सोई पुन्य वानो रे ॥ मन० ॥ ५ ॥

-:इति:-

सुखी होय सहुको खपेजी। सुखकी न जाणे
वात ॥ षट काया हणता थकाजी। कहो किम
सुखीया थात ॥ भ० ही० ॥ २ ॥ चीरो लागे
आंगली जी तड़फ २ दुःख पाय ॥ छेदत भेदत
जीवने जी। दया न आणे घटमांय ॥भ०॥ ही०
॥ ३ ॥ त्रस स्थावर जीवां तणाजी लूटे हरखी
प्राण ॥ समकिती नाम धराइयोजी। मिथ्यातीरा
ए लाण ॥ भ० ॥ ही० ॥४॥ चीर फाड़ भडिता
करेजी। कंद मूल सब खाय ॥ रात्री भोजन
करया थकांजी। किण रीते जैनी थाय ॥ भ० ॥
ही० ॥५॥ अणगले पाणी पीवनांजी। अणगले नीरे
न्हाय ॥ अणगले कपड़ा धोवणाजी। सावण
खार लगाय ॥ भ० ॥ ही० ॥६॥ पाणी ढोले दया
विनाजी। वेवे मोरी खाल। त्रस जिव तिणमें
मरेजी। चाले अनार्जरी चाल ॥ भ० ॥ ही० ॥७॥
सुल्या धान वेवे सेवे जी। जंतर घरना पीलाय ॥
रात दिवस आरम्भ करेजी। जरा दया नहीं

हौदा धरसों रे, आज रंग वरसे रे, आज रंग वरसे रे म्हारे नेम कुंवर विना जीवड़ो तरसे रे; आज रंग वरसे रे ॥ १ ॥ सहस गोपींया ऊभी हाजर करे नेमजी सुँ अर्जी रे, हांकारो भर लियो नेमजी; विवाह जो करसी रे, आज रंग वरसे रे ॥ २ ॥ छप्पन क्रोड जादव मिल आया दे नगारा चढसी रे, छतीस बाजा बाजे जान में; ऊछव करसी रे, आज रंग वरसे रे ॥ ३ ॥ द्वारका-रा नाथ नेमजी सवी देवता तरसे रे, तोरण सें रथ घेर्‌यो नेमजी; हिवड़ो खटके रे, आज रंग वरसे रे ॥ ४ ॥ वड़े भाग सुँ जान वणाई; जुनागढ़ में आई रे, अजब रंगीला जानीया; केसरीया करस्यां रे, आज रंग वरसो रे ॥ ५ ॥ सोवणी सुरत मोहनी मुरत, चांद पुनम केरो चमके रे, समुद्र विजयजी रो लाडलो, गिरनारां चढ गयो रे, आज रंग वरसे रे ॥ ६ ॥

इति

उपदेशी

जिन आपकुं जोया नहीं, तन मन कुं खोजा नहीं, मन मैल कुं धोया नहीं, अंघोल किये से क्या भया ॥ १ ॥ लालच करे दिल दामका, वासद करे बदनाम का, हदे नहीं सुध राम का, हरी हर कहा तो क्या भया ॥ २ ॥ कुंती हुवा धन मालका, धंधा करे जज्जाल का, हदा हुवा चण्डाल का, काशी गया तो क्या भया ॥ ३ ॥ गोगा करे संसार का, जाणे कुकड़ा बाजार का, आया तीर्थ करि द्वारिका, छापा लिया तो क्या भया ॥ ४ ॥ जीवने पित्र कुं सुख नहीं, उनको जक आशक नहीं, चण्डाल में कुछ सक नहीं, तर्पण किया तो क्या भया ॥५॥ इस तांत में कुछ बात है, जिस गगनका परकाश है, सोही भला जिन खात है, ब्राह्मण भया तो क्या भया ॥६॥

इति

ऊपदेशी

जिन आपकुं जोया नहीं, तन मन कुं खोजा नहीं, मन मैल कुं धोया नहीं, अंघोल किये से क्या भया ॥ १ ॥ लालच करे दिल दामका. वासद करे वदनाम का. हृदे नहीं सुध राम का, हरी हर कहा तो क्या भया ॥ २ ॥ कुंती हुवा धन मालका. धंधा करे जञ्जाल का. हृदा हुवा चगडाल का काशी गया तो क्या भया ॥ ३ ॥ गोगा करे संसार का. जाणे कुक्कड़ा बाजार का. आया तीर्थ करि द्वारिका. छापा लिया तो क्या भया ॥ ४ ॥ जीवते पित्र कुं सुख नहीं. ऊनको जक आशक नहीं. चगडाल में कुछ सक नहीं. तर्पण किया तो क्या भया ॥५॥ इस मांस में कुछ वास हे. जिस रामका परकाश हे. सोही भला जिन खास हे. ब्राह्मण भया तो क्या भया ॥६॥

इति

ॐ चेतन चितारां स्तवन ॐ

न चेतन रे यो मोह कर्म संग में ते
॥ चे० ॥ टेक ॥ चौगती मांय जीवां
। चोगान में पल ल्याया रे जीव टका
। हुवा ने टाटा ल्याया रे ॥ चे० ॥ १ ॥
ठन गया नरक योन मे कर्मा निगंतर
कर्मा ठठन गया राग योन फिर नर
रे ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्मा ठठन गया
रे म नायक का अमकारा रे यहां पर
यां बानी म लिया अवतार रे ॥ चे०
कर्मा हुया मानव हुव माडी आहू मय
रे कर्मो हुया गजा गमा फिर रुव
रे चे० ॥ ३ ॥ कर्मा ममा न आयो

संगतरी सज्झाय

संगत करले रे साधु की संगत शिव सुखदाता रे ॥ सं० ॥ टेक ॥ प्रत्यक्ष कल्प वृक्ष सा जुग में जाने पारस मिलीया रे, तुरंत होसी तीरणों थांरो ज्ञान के सुणीया रे ॥ सं० ॥ १ ॥ कुटम्ब कवीला धन दोलत में मत ना कभी तुम राचो रे, विन मतलव विन कोई न पूछे जानों सगपण काचो रे ॥ सं० ॥ २ ॥ जूवावाज चोर लंपट और मद्य मांसका आहारी रे, इतनों की संगत मत कीजो सुन शिक्षा हमारी रे ॥ सं० ॥ ३ ॥ कुगुरु कनक कामनी भोगी, लोभी और धूतारा रे, आप डूबे केसै तुझे तारे, करो विचारा रे ॥ सं० ॥ ४ ॥ गौतमस्वामी पूछा कीधी देखो

गजब हुवा, गुल हुसन वह कहां गया, कहां यह दीदार है॥ सुणो० ॥ ३ ॥ गुरु हीरालाल प्रसादे, चौथमल कहै सुणो अपना, हुवे सो आपका करता विचार है॥ सुणो० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

चौवीसी की गजल

श्री चौवीस जिनराज का जग में आधार है, रटत प्रातः सायंकाल हो पल में पार है॥ ॥ टेक ॥ ऋषभ अजित संभव सार, देवे तार है, अभिनन्दन सुमति पद्म, गुण अपार है॥ श्री० ॥ १ ॥ सुपार्श्व चन्द्रप्रभु, सुविध दातार

मुंह ना सूरज को, उसको भी कालने हेरा है ॥ ल० ॥ २ ॥ मिलके कुमति बदख्वाहने, पिलादी शराब तुझे मोह की ॥ खबरना उसमें पड़ती है, कि यहां चन्द रोज डेरा है ॥ ल० ॥ ३ ॥ कहां तक यहां लुभावोगे, की आखिर-जाना तुमको वहां ॥ उठाके चश्म तो देखो, हुवा शिर पर सवेरा है ॥ ल० ॥ ४ ॥ गुरु हीरा-लालजी के परसाद चौथमल कहे जो चाहो सुख ॥ दया की नाव पर चढ जा, यहां दरियाव गहरा है ॥ ल० ॥ ५ ॥

इति

पढालो इल्म को, खेलना खेलाना छोड़ दो, कहे चौथमल मित्रो सुनो, नसीहत हमारी सार है ॥ ॥ इ० ॥ ५ ॥

(इति)

बारह मासा श्री रिषभदेवजी का

आषाढ़

है जी मरुदेवाजी, सोच करत हैं मन में । मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें ॥

आंकड़ी

प्रथम महीनाजी लगा आसाढ़ चौमासा, इन्दर बरसन की आसा । मरुदेवजी मनमें भई उदासा, प्रभु रिषभ गये वनवासा ॥

दोहा

रिषभ प्रभु वनको गये, जगत सुधारन काज।
भरतादिक सो पुत्रको, बांट दिया सब राज॥
पुत्र तुन सबही जी, मगन होय रहे धन में।
मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥ १॥

श्रावण

श्रावण महीना जी रिमझिम मेहला बरसे,
मेरा पुत्र विना जी तरसे। भरतादिकजी सां
पुत्रन के डरसे, मेरा नंद निकल गया घरसे॥

दोहा

नगर अयोध्या यूं झूरे, कहां गये महाराज।
देनउलंभा भरत का, मेरा पुत्र मिलावो आज॥
अर्जनो मेरे सुन विनाजी, प्राण निकलसी छिनमें।
मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥ २॥

दोहा

इन्द्र ध्वजा आगे चले, भामंडल रहे लार।
चौसठ चवंर सुरपति करें, धुंधवी गगन मभार॥
ऐ सुत तेरा जी, विलसे सुख सूरी गन में।
मेरा रिषभ गया, क्यों वन में ॥ १० ॥

वैशाख

वैसाख महीना जी मरु देवी मन हरषे, जब
रिषभ प्रभु मुख निरखे। नैन पट उघाड़े जी वीत
राग पद सरखे, चढ़े शुकूल ध्यान कूं परखे॥

दोहा

गज ऊपर मुक्ति गई, श्रीमरुदेवी मात।
पहिले शिवजननी दिया, ऐसे रिषभ सुजात॥
जग सुख कारनजी, विचरे प्रभु मगनमें।
मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें ॥ ११ ॥

जेठ

जेठ का महीना जी रुत गरमी की आई, मैं रिषभ चरण लव लाई। दरश नित तेरा जी मुझ कूं है सुखदाई, सेवा प्रेम सदा मन भाई॥

दोहा

धर्म शील आधार से, कुशल सदा आनन्द।
रिद्धसार जिन नाम से, रहे दुरती दुख दन्द॥
हेजी मन सुध करजी, राखो जिन चरनन में।
मेरा रिषभ गया, क्यों वनमें॥ १२॥

इति

पर करिये निगाह। सर्प चंडकोसा हुवा इस क्रोध के परताप से ॥ ५ ॥ दिल भी काबू नहीं रहे नुकसान कर रोता वही। धर्म कर्म भी नहीं गिने, इस क्रोध के परताप से ॥ ६ ॥ खुद जले परको जलावे विवेक की हानी करे। सूख जावे खून उसका, क्रोध के परताप से ॥ ७ ॥ जनके लिये हँसना बुरा, चिराग को जैसे हवा। ज्यों इन्सान के हकमें समझ, इस क्रोध के परताप से ॥ ८ ॥ शैतानका फरजन्द यह और जाहिलों का दोस्त है। वदकार का चाचा लगे, इस क्रोध के परताप से ॥ ९ ॥ इवादत फाका कसी, सब खाक में देवे मिला। दोजख का मुंह देखेगा, इस क्रोध के परताप से ॥ १० ॥ चण्डाल से बदतर यही, गुस्सा बडा हराम है। कहे चौथमल कर हो भला, इस क्रोध के परताप से ॥ ११ ॥

इति

छोडदे ॥५॥ रब का हुकम माना नहीं, अजाजिल काफिर बन गया। शैतान सब उसको कहे, तूं मान करना छोडदे ॥ ६ ॥ गुरु के परसाद से कहे चौथमल प्यारे सुनो। आजिजी सब में बडी, तूं मान करना छोडदे ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

गजल दगाबाजी की

जीना तुमे यहां च्यार दिन तूं दगा करना छोडदे। पाक रब दिल का सदा तूं दगा करना छोडदे ॥ टेर ॥ दगा कहो या कपट जाल फरेब या निरघट कहो। चीना चार कबानवन, तूं दगा करना छोडदे ॥ १ ॥ चलने उठने देखने, बोलने हसने दगा। तोलने और नापने में, दगा करना छोडदे ॥ २ ॥ माता कहीं बहन कही, पर नार का छलना फिरे। क्यों जाल कर

गजल संतोष की

सबर नर को आती नहीं, इस लोभ के परताप से। लाखों मनुष्य मारे गये, इस लोभ के परताप से ॥ टेर ॥ पाप का वालिद बडा, और जुल्म का सरताज है। वकील दोजख का बना, इस लोभ के परताप से ॥ १ ॥ अगर शहनशाह बने, सर्व मुल्क तावे में रहे। तो भी ख्वाहिश नहीं मिटे, इस लोभ के परताप से ॥ २ ॥ जाल में पक्षी पड़े, और मच्छी कांटे से मरे। चोर जावे जेल में, इस लोभ के परताप से ॥ ३ ॥ ख्वाब में देखा न उसको, रोगी क्यों नहीं नीच हो। गुलामी उस की करे, इस लोभ

सबहि सोलवें वर्ष लों, मूल सहित विनसाय॥
विद्या में हैं कुशल नर, पावे कला सुजान।
द्रव्य सुभाषित कोहू पुनि, संमत करि पहिचान॥
सोरठ सोवान सधोयो, चढ्यो न गढ़ गिरनार।
गङ्गा न नाहायो गोमती, गयो जमारो हार॥
सोरठ राग सुहामणो, मुखे न मेली जाय।
ज्यूं ज्यूं रात गलन्तड़ी, त्यूं त्यूं मिठी थाय॥
भुवना के ढकन को, रच्यो विधाना मौन।
ज्ञानी सभा मह आभरण, अज्ञहि गुण को भौन॥
विद्या दान न ज्ञान नर, शील धर्म गुण हीन।
विचरहि ते नर रूप पशु, भूमि भार अति दीन॥
जहां दया तह धर्म है, ज्यां लोभ तहां पाप।
जहां क्रोध तह काल है, जहां क्षमा तहं आप॥
जिवड़ा जिनवर पूजीये, नाम सम्पति होय।
राजा नमे प्रजा नमे, वाल न वांका होय॥
प्रभु को नाम अमोल है जामें लगत न मोल।
नफा वहोत टोटो नहीं, भर भर के मन तोल॥

कबिरा नैन निहारिया, नहीं पलक की आस ॥
तुलसी जग में आइके, कर लीजे दो काम।
देवे को टुकड़ा भलो, लेवे को हरि नाम ॥
प्रेम २ सब कोई कहे, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय ॥
लौ लागी जब जानीये, छूटि न कबहूं जाय।
जीवन लौ लागी रहे, मुवा माहिं समाय ॥
मन पच्छी तब लगि उड़े, विषय वासना मांहिं।
ज्ञान बाज की झपट में, जब लगि आया नांहि॥
मनके बहुत रङ्ग हैं, छिन २ मध्ये होय।
एक रङ्ग में जो रहे, ऐसा बिरला कोय ॥
जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौरि।
सहजे हीरा ऊपजे, जो मन आवे ठौरि ॥
मन के मते न चालिये, मन का मता अनेक।
जो मन पर असवार है, ते साधु कोई एक ॥
गोधन गजधन बाजिधन, और रतन धन खानि।
जब आवे सन्तोष धन, सब धन धूरि समान ॥

फल निर्जरा होत है, पर समाध चित चाव ॥
पुण्य हीण को न मीले, भली वस्तु का जोग ।
जब द्राख पक्कान लगे, तब काग कंठ होय रोग ॥
चिड़ी कमेड़ी कागला, रात चुगण नहीं जाय ।
नर देह धारी मानवी, रात पड्या क्यों खाय ॥
आंधो जीमण रातरो, करे अधर्मी जीव ।
जानव आगे छो कार, दे नरकारी नीव ॥
पाखंडी पूजा करे, पंडित नहीं पहचान ।
गोरस तो घर २ विके, दारु विके दुकान ॥
गुरु लोभी चेला लालची, दोनुं खेले दाव ।
दोनुं डूबे वापड़े, बेठ पत्थर की नाव ॥
एक एक के पीछे चले, रस्ता न कोई बूझता ।
अन्ध फसे सब घोर में, कहां तक पुकारे सूजता ॥
दोवो पग लागो नहीं, गेले चले फूंक ।
गुरु बिचारा क्या करे, चेले मांहि चूक ॥
दिधी गाली एक है, पलट्या गाल अनेक ।
जो गाली देवे नहीं, तो रहे एक की एक ॥

एक निन्दक के सीस पर, हजारों पाप को भारो।
उत्तम पर कारज करें, अपनो कार्ज बिसार ॥
पुरे अन्न जहान को, ता पति भिक्षा धार ॥
अमृत भरे तन मन बचन, निशदिन जग उपकार ।
पर गुण मानत मेरु सम, बिरले जन संसार ॥
सुत आज्ञाकारी जिनहिं, अनुगामिनि तिय जान ।
विभव अलप संतोष जेहि, सुरपुर यहां बिज्ञान ॥
मैं सुत जे पितु भक्तिरत, हित कारक पितु होय ।
जेहि बिश्वास सोइ मित्रवर, सुख दायक तिय सोय
कारज हनत परोक्ष में, प्रिय बच मिलत विशेष ।
तेहि मित्रन कूं त्यागिये, बिष घट पय मुख देख ॥
नहि बिश्वासे कुमित्र कर, कीजिय मित्रहु कौन ।
कदाहि मित्र कहु कोपकरि, गावहु सब दुख मौन ॥
कहा होय तेहि धेनु जो दूध न गाभिन होय ।
कौन अर्थ वहि सुत भय पंडित भक्त न जोय ॥
भूपति सो पंडित बचन, सो कन्या को दान ।
एकै एकै बार ये, तीनों होत समान ॥

रहनो सदा इकन्त को, पुनि भजनो भगवन्त ।
कथन श्रवण अद्वैत को, यही मतो है सन्त ॥
यही मतो है सन्त, तत्वको चितवन करनो ।
प्रत्यक ब्रह्म अभिन्न, सदा उर अन्तर धरनो ॥
कह "गिरधर" कविराय, वचन दुर्जन को सहनो।
तज के जन समुदाय, देश निर्जन में रहनो ॥ ३ ॥

बहता पाणी निर्मला, पड़ा गन्ध सो होय ।
त्यों साधु रमता भला, दाग न लागे कोय ॥
दाग न लागे कोय, जगत से रहे अलहदा ।
राग द्वेष युग प्रेत, न चित को करे विच्छेदा ॥
कह "गिरिधर" कविराय, शीत उष्णादिक सहना ।
होय न कहूं आसक्त, यथा गङ्गा जल बहता ॥४॥